दो प्रोग्राम थे जिनके प्रसारण के दौरान बजने वाले विज्ञापनों की मांग सबसे ज्यादा थी। इतनी ज्यादा कि उस 'स्लाट' को 6 महीने पहले बुक करना पड़ता था। लोकप्रियता की ये चरम सीमा थी, इनके अलावा 'इंस्पेक्टर ईगल' एक ऐसा कार्यक्रम था जिसके प्रसारण के दौरान सड़कें सूनी हो जाती थीं। भारतीय-संस्कृति और इतिहास को उजागर करते इन कार्यक्रमों को भला कौन भूल सकता है? 'पत्थर बोलते हैं,', 'कोहिनूर गीत गुंजार', 'एवरेडी के हमसफर', 'किस्सा तोता मैना', 'एक धागे के मोती' मनोरंजन की नई परिभाषा, सैरीडॉन के साथ, शालीमार सुपर लैक जोड़ी', बॉर्नविटा क्विज कॉन्टेस्ट, 'सिबाका गीता माला', एस. कुमार्स का 'फिल्मी मुकदमा' और विविध भारती पर लगातार 19 वर्ष तक चलने वाले हास्य प्रोग्राम 'सेन्टोजन की महफिल' जैसे प्रायोजित कार्यक्रम। बिनाका गीत माला के बाद विश्व में सबसे लम्बी अवधि तक प्रसारित होने वाला ये कार्यक्रम मेरे द्वारा ही निर्मित और प्रस्तुत होता था।

रेडियो सिलोन की लोकप्रियता में अपना विनम्र योगदान देने के बाद विविध भारती को देश की सुरीली धड़कन बनाने में मेरे योगदान का सही मूल्यांकन तब हुआ जब विविध भारती की विज्ञापन प्रसारण सेवा ने अपनी 'सिल्वर जुबली' पर सर्वश्रेष्ठ 25 प्रायोजित कार्यक्रमों की घोषणा की। इनमें तकरीबन 9 में मेरा योगदान था।

अमीन सयानी, विजयकिशोर दुबे, बालगोविन्द श्रीवास्तव, हसन रिज़वी, विनोद शर्मा, हमीद सायानी, शील कुमार, मधुप शर्मा, सत्य शर्मा, प्रदीप शुक्ला, कुसुम कपूर, सईद-उल-हसन, गोपाल शर्मा, रूपा सांगले के.के. बिलिमोरिया, आशा शर्मा, ज़रीना क़ादर, बृजभूषण, मधुर जी जैसी दिग्गज हस्तियों के योगदान के बिना विविध भारती कभी भी 'देश की सुरीली धड़कन' का मुकाम हासिल नहीं कर सकती थी।

जब हम किसी शानदार इमारत पर नज़र डालते हैं तो उसके कंगूरों पर तो हमारी नज़र जाती है पर जिस पर वो इमारत खड़ी है, उसकी नींव के पत्थरों पर हमारा थोड़ा सा भी ध्यान नहीं जाता... 'जो दिखता है वही बिकता है' की परिपाटी, विविध भारती सेवा पर आज पूरी तरह हावी हो चुकी है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़ी उसकी हर साइट पर विविध भारती के कार्यक्रमों की उपलब्धियों, कार्यक्रम निर्माताओं और प्रस्तुतकर्ताओं का लेखा-जोखा और तारीफों के पुलन्दे मिलते हैं, पर उन हस्तियों का नाममात्र का ज़िक्र नहीं जिन्होंने सही मायनों में विविध भारती को देश की सुरीली धड़कन बनाया और विविध भारती की प्रसारण सेवा को जमीन से उठाकर आसमान की बुलंदियों तक पहुंचाया।

उषा साराभाई, अशोक आजाद, राम सिंह पवार, मुक्ता चतुर्वेदी, कब्बन मिर्जा, विजय चौधरी, रेणु बंसल, यतीन्द्र श्रीवास्तव, बृजभूषण साहनी, लोकेन्द्र शर्मा, पुरुषोत्तम दारवेरक, गंगा प्रसा द माथुर, जहां तक मुझे याद आते हैं, ये विविध भारती सेवा के कुछ वो नाम हैं- जिन्होंने उसे शिशुअवस्था से किशोरावस्था तक पहुंचाने में अपना खून-पसीना एक किया, पर जिनका तनिक सा ज़िक्र भी कहीं नहीं मिलता। यहां मुझे याद आ रहे हैं आकाशवाणी की प्लेटिनम जुबली के अवसर पर ढाई मिनट के उस विज्ञापन के शब्द, जिसे तकरीबन 15 दिन तक मेरी आवाज़ में सभी चैनलों पर प्रसारित किया गया था-

(पार्श्व संगीत)

75 वर्ष पहले इस देश की ध्वनि तरंगों ने छुआ था एक नया आकाश

(आलाप)

आकाश से निकली एक वाणी, जिसका उद्घोष देवता किया करते थे

(संगीत)

देखते ही देखते वो हुई जनवाणी

(पार्श्व में -डगर डगर सब कलियां जागीं)

बह निकली शब्द और संगीत की धारा

(पार्श्व में)

सुर की नदियां हर दिशा से बह सागर में मिले0- भीमसेन जोशी

इस गंगा को भागीरथ ने ही नहीं हर घर ने समेटा अपने रेडियो सेट में

(ओपनिंग सिग्नेचर ट्यून आफ एआईआर)

एफ एम की परदादी, शार्टवेव की चाची और मीडियम वेव की नानी...यही तो है आप सबकी आकाशवाणी

(पार्श्व में - यहां के गीत वाह, वाह, मीठी बोली वाह, वाह- अनु मलिक)

दिस इस आल इंडिया रेडियो राइट फ्रम 23 जुलाई 1927 टू 23 जुलाई 2002, गिविंग यू 75 ईयर्स आफ ब्राडकास्टिंग।

(पार्श्व में- बिगुल, मार्चिंग म्यूजिक)

जुलूस, जलसा, आंधी, तूफान, कर्फ्यू, दंगा या हो अंधाधुंध बारिश का पानी-

सदा सभी के साथ चली- कभी न थमी-

वो है आकाशवाणी

(पार्श्व में- मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा- भीमसेन जोशी)

बिगुल, मार्चि ग म्यूजिक

उपरोक्त शब्दों के अर्थ इस इलेक्ट्रानिक क्रांति के युग में क्या बदल चुके हैं? कंटेट, भाषा, आवाज़ें, प्रस्तुतिकरण, क्या कल की बात बन कर रह गए हैं? आज पर यदि हम नजर डालें तो देखते हैं कि तकनीकी विकास पाकर रेडियो अब एफ एम ब्राडकास्टिंग में ढल चुका है। उच्चस्तरीय ध्वनि और साफ-सुथरे प्रसारण का आलंबन रेडियो को मिल चुका है। नित नए नए रेडियो स्टेशनों में इज़ाफा हो रहा है...पर क्वालिटी कहीं पीछे छूट जा रही है। और क्वालिटी अपने उरज पर है। कंटेट, प्रस्तुतिकरण और वाणी की शुद्धता जैसे अब किताबों तक ही सीमित रह गए हैं। पर एक चीज़ आज भी नहीं बदली- रेडियो बीते कल का हो या आज का। उसका आधार, उसके कार्यक्रमों की धुरी कल भी फिल्म संगीत था और आज भी है।

इसके बिना कोई भी धड़कन 'सुरीली' नहीं बन सकती। इसका अनुभव विविध भारती अतीत में कर चुकी है। ■